'प्रवासी हिंदी साहित्य ने बना ली है अपनी पहचान'

- विश्व हिंदी दिवस पर साहित्य अकादमी द्वारा प्रवासी हिंदी साहित्यकार सम्मेलन आयोजित
- सम्मेलन में ब्रिटेन, अमेरिका, जापान, हालैंड समेत 13 प्रवासी हिंदी साहित्यकार सम्मानित हुए

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: प्रवासी साहित्य की विविधता अब किसी से छिपी नहीं है। यह साहित्य अपनी यादों से जुड़े साहित्य का ऐसा समुच्चय है, जिसने अपनी पहचान बना ली है। यह बात साहित्य अकादमी के सचिव के श्रीनिवासराव के श्रीनिवास राव ने कही। वह साहित्य अकादमी की ओर से विश्व हिंदी दिवस पर आयोजित प्रवासी हिंदी साहित्यकार सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

सम्मेलन में ब्रिटेन, अमेरिका, जापान, सिंगापुर, म्यांमार, हालैंड, दक्षिण कोरिया के 13 प्रवासी हिंदी साहित्यकारों का अभिनंदन किया गया। अध्यक्षता ब्रिटेन से आईं वरिष्ठ प्रवासी लेखिका दिव्या माथुर ने की। अध्यक्षीय वक्तव्य में दिव्या माथुर ने कहा कि अब हिंदी को वैश्विक भाषा बनाने के लिए अन्य कई देशों में इसके प्रचार-प्रसार की अनेक संभावनाओं को देखना होगा। कार्यक्रम में पद्मेश गुप्त ने ब्रिटेन, अनिता कपूर ने अमेरिका, तोमियो मिजोकामी ने जापान, आराधना श्रीवास्तव ने सिंगापुर, चिंतामणि वर्मा ने म्यांमार, रामा तक्षक ने हालैंड और सृजन कुमार ने दक्षिण कोरिया में हिंदी की वर्तमान स्थिति और प्रवासी लेखन पर संक्षिप्त टिप्पणियां प्रस्तुत कीं। भारत से वरिष्ठ हिंदी सेवी नारायण कुमार ने हिंदी की वैश्विक पहचान के समक्ष आसन्न चुनौतियों पर बात की। कार्यक्रम में दक्षिण भारत में हिंदी के कई लेखकों ने भी हिस्सा लिया।